नागार्जुन की कविता में उदात्त तत्व

विवेक कुमार
रिसर्च स्कॉलर, **ति. माँ. भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर**
Email: vivekmadhuban@gmail.com

हिंदी साहित्य के इतिहास में बाबा नागार्जुन मुख्यतः कवि के रूप में विख्यात हैं। उनका जीवन जितना वैविध्यपूर्ण एवं रोचक है, उतना ही उनका व्यक्तित्व भी उदात्त एवं आकर्षक। वे उस धारा के कवियों में गिने जाते रहे हैं, जो अपनी रचना के माध्यम से शोषक वर्ग के खिलाफ शोषित वर्ग में चेतना लाने तथा उन्हें संगठित कर शोषणमुक्त समाज की स्थापना की कोशिशों का समर्थन करते हैं। ध्यातव्य है कि जब हम किसी रचनाकार की रचनाओं को किसी धारा विशेष के चश्मे से देखने लगते हैं तो हम कहीं न कहीं उन कवियों की संवेदना और शिल्प सभी को उस धारा के हवाले कर देते हैं। हिंदी साहित्य के इतिहास में धाराओं की परिकल्पना वास्तव में भारतीय समाज के जातिवादी ढांचे की नकल प्रतीत होती है।

नागार्जुन की कविताएं युगबोध की कविता है, जिसमें तत्कालीन युग का यथार्थ प्रतिबिंबित होता है। उनकी रचनाएं अपने समय के सामाजिक संघर्षों और चिंताओं को वाणी देती हैं। इसीलिए नामवर सिंह ने कहा है कि *''तुलसीदास के बाद नागार्जुन अकेले ऐसे कवि हैं, जिनकी कविता की पहुँच किसानों की चौपालों से लेकर काव्यरसिकों की गोष्ठी तक है।''1* वे उस तरह के कवि नहीं हैं, जो सत्ता को रिझाने और मन बहलाने का काम करती है, बल्कि वे जनता के कवि हैं और साहित्य सृजन का अंतिम लक्ष्य समाजसुधार को मानते हैं। जन संघर्ष में उनकी आस्था और घरफूंक मस्ती उनके व्यक्तित्व और उनके साहित्य दोनों में प्राप्त होते हैं। इस अर्थ में वो कबीर की परंपरा से जुड़ जाते हैं और इसीलिए उन्हें आधुनिक कबीर कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होनी चाहिए क्योंकि कबीर की तरह वे भी प्रतिबद्धता के साथ अपने समाज के हित के लिए कटिबद्ध हैं–

"प्रतिबद्ध हूँ, जी हाँ, प्रतिबद्ध हूँ
बहुजन समाज की अनुपल प्रगति के निमित्त
संकुचित 'स्व' की आपाधापी के निषेधार्थ
अविवेकी भीड़ की 'भेड़िया–धसान' के खिलाफ
अंध–बधिर 'व्यक्तियों' को सही राह बतलाने के लिए
अपने आप को भी 'व्यामोह' से बारंबार उबारने की खातिर
प्रतिबद्ध हूँ, जी हाँ, शतधा प्रतिबद्ध हूँ!"2

नागार्जुन की कविताओं की यदि शिल्पगत बारीकियों को देखें, तो हमें इतने छंद, इतने ढंग, इतनी शैलियाँ और इतने काव्य रूपों का इस्तेमाल दिखता है कि हम दंग रह जाते हैं कि आखिर साहित्यिक पंडितों द्वारा घोषित प्रगतिवादी कवि संवेदना के साथ शिल्प को इतनी बारीकी से कैसे साध सकता है।

उनकी लोकप्रियता का यह भी एक आधार है जो उन्हें प्रगतिवादी कवि होने पर भी किसी धारा विशेष के बंधन से मुक्त करता है। यदि उनके संपूर्ण काव्यों की बारीकी से पड़ताल की जाए तो उनमें उनके उदात्त व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है ।

पाश्चात्य विचारक लॉन्जायनस ने उदात्त की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए कहा है कि *किसी रचना में उदात्त विचार, भावों का उदात्त चित्रण, अलंकार नियोजन, उत्कृष्ट भाषा, उदात्त रचना–विधान आदि का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है।3* जब ये तत्व किसी रचना में पाए जाते हैं तभी वह रचना उत्कृष्ट साहित्य की कोटि में अपनी पहचान सुरक्षित करती है। सूक्ष्म स्तर पर देखने से लॉन्जायनस द्वारा स्थापित तत्व हमें नागार्जुन की कविताओं में भी दृष्टिगत होते हैं।

उदात्त के पांच तत्वों में सर्वप्रमुख है, *उदात्त विचार अर्थात् महान विचार।* महान शब्द उन्हीं के मुख से निकलते हैं जिनके विचार गंभीर और गहन हों। महान विचारों के लिए रचनाकार का दृष्टिकोण उदात्त होना चाहिए। लॉन्जायनस ने कहा – *औदात्य आत्मा की महानता का प्रतिबिम्ब है।* नागार्जुन की रचनाओं में औदात्य इसीलिए आ सका, क्योंकि उनका व्यक्तित्व महान था। महान आचरण और विचार से अभिव्यक्ति की सहज क्षमता आती है, जो लेखक की भावना को रचना के बीच से निकालकर एक ही क्षण में पाठक को अभिभूत कर देती है।

जहाँ तक नागार्जुन की बात है, *'बादल को घिरते देखा है', 'प्रेत का बयान', 'भगत सिंह', 'प्रतिबद्ध हूँ, समबद्ध हूँ, आबद्ध हूँ', 'अकाल और उसके बाद', 'उनको प्रणाम', 'कालिदास', 'जी हाँ, लिख रहा हूँ' 'घिन तो नहीं आती है', 'सिंदूर तिलकित भाल', 'खुरदरे पैर', 'शासन की बंदूक', 'पछाड़ दिया मेरे आस्तिक ने', 'मनुष्य हूँ', 'चंदू मैंने सपना देखा'* जैसी कविताओं की एक लंबी लिस्ट है जिनके अंदर उनके घनीभूत उदात्त विचारों का गहरा समंदर हहरा रहा है।

नागार्जुन ने अकाल और उसके बाद में जिस तरह पहले अकाल का और फिर अकाल के बाद का चित्र खींचा है, वह किसी भी संवेदनशील प्राणी को झकझोरने की अद्‌भुत क्षमता रखती है। प्रथम पंक्ति *कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास* में ही निर्जीव बेजुबान का मानवीकरण करके पाठक की संवेदनाओं को उभारते हैं और उसके बाद कविता में प्रयुक्त कानी कुतिया, छिपकलियां, चूहे, कौआ, धुआं जैसे साधारण जीव–जंतु और घरेलू वस्तुओं के सहारे अकाल की भयावहता (जिसे केवल अकाल पीड़ित ही समझ सकते हैं) को पाठक के सम्मुख इतनी आसानी से प्रस्तुत कर देते हैं कि पाठक पढ़ कर अकाल को अपने जीवन में घटित और उसकी पीड़ा को पूरी शिद्दत से अपने अंतर्मन में महसूस करने लगता है। कुली और मजदूर को देखकर कवि को कैसा लगता है इसका बड़ा कारुणिक दृश्य *'खुरदरे पैर'* कविता में मिलता है। *'शासन की बंदूक'* में कवि बंदूक के दम पर जनता पर शासन कर रही व्यवस्था को चुनौती देते हैं, और दिखाते हैं जनता के प्रतिरोध के सामने शासन के बंदूक की ताकत जनता का बाल भी बांका नहीं कर सकती बाल न बांका कर सकी शासन की बंदूक। नागार्जुन को अपने अंचल से गहरा लगाव है। यही लगाव उनकी कविता में कहीं–कहीं नॉस्टेलजिक बोध में परिवर्तित हो गया है। कविता *'सिंदूर तिलकित भाल'* में कवि नगर में व्यक्ति के संबंधहीन हो जाने को बड़ी मार्मिकता के साथ व्यक्त करता है जबकि ग्रामीण परिवेश में अभी भी सामाजिकता विद्यमान है। ग्राम्य जीवन और अपनी मिट्टी से प्रेम को हम *'पछाड़ दिया मेरे आस्तिक'* ने में उभरी उनकी घनीभूत भावुकता से समझ सकते हैं। बाबा नागार्जुन की कविताओं का जो कलेवर है,

जो भाववस्तु है, जो शैली है और इन सबसे बढ़कर साधारणीकरण की जो उनकी क्षमता है, उसने सम्मिलित रूप से उनकी रचनाओं को उदात्त बनाया है।

औदात्य का दूसरा तत्व है *–भावों का उदात्त चित्रण*। लोंजायनस का कथन है– *मैं यह बात पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि जो आवेग, उन्माद, उत्साह के साथ फूट पड़ता है और एक प्रकार से वक्ता के शब्दों को विक्षेप से परिपूर्ण कर देता है, उसके यथास्थान व्यक्त होने से स्वर में जैसा औदात्य आता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।4* नागार्जुन की अधिकांश कविताओं में उनके भाव पाठक को आंदोलित करते हैं। किसी भी भाव का चित्रण उन्होंने इतने मनोयोग से किया है जैसे किसी की पीड़ा उनकी अपनी पीड़ा हो, किसी की खुशी उनकी अपनी खुशी हो और जब उनकी रचना में कहीं व्यवस्था के प्रति विद्रोहात्मक रवैया दिखता है, तो लगता है नागार्जुन स्वंय ही विद्रोहियों का नेतृत्व कर रहे हों। उनकी कविताओं के भाव सुनियोजित न होकर उनकी संवेदनाओं का स्वाभाविक विस्फोट हैं, जो किसी रचना के उदात्तीकरण का विधायक तत्व है। नागार्जुन की वाणी और शैली में जो असामान्य अभिव्यक्ति का कमाल है, भावों की जो गरिमा है, वह हिंदी साहित्य में बहुत ही विरल है। नागार्जुन ने विविध विषयों पर अपनी कलम चलाई है। अपने रचनाकर्म में नागार्जुन ने जिन शब्दों, छंदों, अलंकारों, प्रतीकों, बिम्बों, मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग किया है, उनकी सर्वप्रथम संवेदना के संदर्भ में गहन जांच पड़ताल की है। यही कारण है कि उनके भावों के चित्रण उदात्त स्तर के बन सके हैं।

औदात्य का तीसरा विधायक तत्व है *–अलंकार* । अलंकारों की भाषा विषय को भव्यता प्रदान करती है, लेकिन अलंकार, भाषा पर लदे प्रतीत नहीं होने चाहिए, बल्कि भावावेग की अवस्था में अनायास, सहज और स्वाभाविक ढंग से काव्य में समाहित होने चाहिए। नागार्जुन की कविता में अलंकारों का प्रयोग प्रयत्नज नहीं, वरन् नागार्जुन ने उसे अपनी कविता में सहज बनाकर प्रस्तुत किया है। *नागार्जुन स्पष्टभाषी, सीधी–खरी सुनानेवाले समाजवादी यथार्थवादी कवि हैं। वे अलंकारों के पीछे नहीं पड़े, किन्तु कहीं–कहीं भावों की निसृति के साथ अलंकार स्वतः चले आये।5* कविता में शब्दालंकार को नागार्जुन ने अपनी एक कविता में 'भूस की बोरियाँ तथा अभिधा, लक्षणा और व्यंजना को उसकी सहेलियाँ' कहा है –

''आपके शब्दालंकार

भूस की बोरियाँ है उसके लिये
प्लीज हट जाओ सामने से
उसे परेशान मत करो
अभिधा, लक्षणा, व्यंजना
सब की सब सहेलियाँ हैं उसकी
उसे खो चुके हो आप,
सदा सदा के लिये !
ऐसे भी हम क्या ! ऐसे तुम भी क्या!''6

नागार्जुन की कविताओं को सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर हमें उनमें अनुप्रास, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास, मानवीकरण, असंगति आदि जैसे अलंकारों का प्रयोग बहुतायत में दिखता है। उदाहरण के लिये *'हजार हजार बाँहोंवाली'* की इस पंक्ति में अनुप्रास की छटा है–

''पंडित की मैं पूछ, आज–कल कबित कुठार कहाऊँ
जालिम जोकों की जमात पर कस–कस लात जमाऊँ
चिंतक चतुर चाचा लोगों को जा–जा निकट चढ़ाऊँ''

उत्प्रेक्षा अलंकार के लिये नागार्जुन की *'नवादा'* शीर्षक कविता का अंश द्रष्टव्य है–

''पीच रोड पर
धूसर दाग लहू के देखे
बेदम बूढ़े हाथी की खुरदरी पीठ पर
मसल गया हो कोई ज्यों
सूखा–सूखा सिन्दूर''7

सतरंगे पंखोंवाली कविता में उपमा का प्रयोग देखिये–

''बिल्लौरी काँच–सी कांतिवाली यह गर्दन
बरगद सी छतनार ऐसी पीठ
नन्हे मसूर–से ऐसे ये नेत्र
देखी नहीं होगी ऐसी खूबसूरती''8

असंगति अलंकार के उदाहरण नागार्जुन की निम्नलिखित पंक्तियों में है–

''वोट मिलना लगता आसान
कहीं पर भोज कहीं गुनगान
कहीं पर थोक नगद नगदान''9

नागार्जुन की कई कविताओं में मानवीकरण के दृष्टांत मिल जाते हैं, उदाहरण के लिये उनकी कविता *'सत्य'–*

''सत्य को लकवा मार गया है
वह लंबे काठ की तरह
पड़ा रहता है सारा दिन, सारी रात
वह फटीदृफटी आँखों से
टुकुर–टुकुर ताकता रहता है सारा दिन, सारी रात''10

नागार्जुन की कविता में प्रयोग किए गए उपर्युक्त अलंकारों के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि ये अलंकार उनकी कविता में सहज रूप में आये हैं जिसके कारण कविता की संप्रेषण क्षमता सटीक और तीक्ष्ण हुई है जो कविता को उदात्त स्तर पर ले जाने में सहायक सिद्ध हुआ है ।

उत्कृष्ट भाषा, औदात्य का अनिवार्य तत्व है और सुन्दर शब्दों का संयोजन इसके लिये अति आवश्यक है। सुन्दर शब्द अर्थात् वह शब्द जो संवेदना को वहन करने की पूरी क्षमता रखता हो। सुन्दर शब्दों में ही श्रेष्ठ विचारों को अभिव्यक्त कर पाने की क्षमता होती है और ऐसी ही अभिव्यक्ति रचनाओं के

औदात्य में सहायक सिद्ध होती है। नागार्जुन अपनी कविता के हरेक शब्द तथा हरेक पंक्ति के साथ घंटों संघर्ष करते थे, जूझते थे, और तब तक असंतुष्ट रहते थे जब तक उनकी अभिव्यक्ति मनोनुकूल नहीं हो जाती। सटीक अभिव्यक्ति का संतोष भी उनके चेहरे स्पष्ट झलकता था। हम इसे केवल शिल्प सजगता नहीं कह सकते, बल्कि यह अपनी संवेदना के लिए अनुकूल अभिव्यक्ति पाने की छटपटाहट है। कविता के अंतर्गत कैसे शब्द आएं, उसके बिंब और प्रतीक किस प्रकार नियोजित हों, ये सारी बातें उन्हें परेशान करती हैं, और वे उनके हल ढूंढ़ते हुए अक्सर देखे जाते रहे हैं। नागार्जुन की शब्द साधना कुछ वैसी ही है जिसे दण्डी ने 'शब्दपाक' कहा है । नामवर जी के अनुसार *तुलसीदास और निराला के बाद कविता में हिंदी भाषा की विविधता और समृद्धि का सर्जनात्मक संयोग नागार्जुन में ही दिखाई पड़ता है।*11 घुमंतू प्रवृत्ति के होने के कारण नागार्जुन बहुभाषाविद थे। उनकी रचनाओं में हिंदी के अलावा मैथिली, बंगाली, पाली, संस्कृत, अपभ्रंश आदि का यदा–कदा प्रयोग हम देख सकते हैं अर्थात् विषयानुसार जिस भाषा में जो भी शब्द उनके भाव को संवहन करने की क्षमता रखती हो उसका वे निःसंकोच प्रयोग करते थे। वे कबीर की भांति अपने विचारों को भाषा से कहलवा लेने का सामर्थ्य रखते थे 'बन गया तो सीधे–सीधे नहीं तो दरेरा देकर । एक कुशल कलाकार की भांति उनकी कविता में कसाव है। *उनकी भाषा भावों के अनुरूप कहीं सरल, साधारण, बोलचाल के जनपदीय शब्दों से युक्त है, तो कहीं संस्कृत की समास शैली में ढली तत्सम शब्दों से पूर्ण अलंकृत तथा उदात्त है।*12 उनकी कविता *'खाली नहीं खाली और खाली'* में उन्होंने वर्तमान यथार्थ को पूरी सटीकता से व्यक्त करने के लिए अंग्रेजी शब्दों का सहारा लिया है–

''खाली नहीं स्ट्रेचर, खाली नहीं सीट
खाली नही फुटपाथ, खाली नहीं स्ट्रीट
खाली नहीं ट्राम, खाली नहीं ट्रेन
*खाली नहीं माइंड, खाली नहीं ब्रेन''*13

पौराणिक कथा पर आधारित कविता *'भस्मांकुर'* में तत्सम शब्दों का प्रयोग किया गया है–

''असमय अंकुर, असमय लता वितान
वृद्ध वनस्पतियों का नव परिधान
असमय मुगुलोद्गम मधुमद चहुँ ओर
*असमय कुसुम विलास, हास हिलकोर''*14

छात्र आन्दोलन के एक प्रसंग को चित्रित करने के लिये एकदम सीधी सपाट बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल किया गया है–

''ट्रेन की छत पर खड़े हैं तीन लड़के
सैकड़ों विद्यार्थियों की भीड़
नीचे प्लेटफारम पर खड़ी है
सभी हैं विक्षुब्ध
*सब हैं क्रुद्ध, काली झंडियों से लैस''*15

भाव को पूरी सटीकता से व्यंजित करने के लिये वे क्षेत्रीय और लोकभाषा के शब्दों का प्रयोग करने में हिचकिचाते नही हैं–

''धरती धरती है–
पन्हाई हुई गाय नहीं

कि चट से दूह लो कटिया भर दूध''16

स्पष्ट है कि नागार्जुन की भाषा, सर्वहारा वर्ग से लेकर विद्वज्जनों में सर्व स्वीकृत भाषा है। लोक के साथ इनका गहरा जुड़ाव इनकी साहित्यिक शक्ति का आधार है। यही कारण है कि वे हिंदी भाषा के मूल स्रोतों से जुड़े रहे तथा न केवल हिंदी कविता, बल्कि हिंदी भाषा को भी समृद्ध करते रहे ।

औदात्य का पांचवां तत्व है–*उदात्त रचना विधान*। जब कोई साहित्यकार बांसुरी की मधुर तान की भांति अपनी रचना के निर्माण में प्रयोग आने वाले सभी तत्वों को व्यवस्थित क्रम में सामंजस्य बिठाता है, तभी वह रचना उदात्त बन पाती है। डॉ सोरेन सिंह शास्त्री के अनुसार– *साहित्यकार की सफलता इसमें है कि उसने जिस उदात्त विचार को पाठक तक पहुँचाने का संकल्प किया है, वह अपने मूल रूप में गंतव्य स्थान तक पहुँच सके। इसके लिये वह बीज रूप उदात्त विचार को कल्पना के आश्रय से उदात्त भाव, भाषा, शैली, पात्र एवं उनके कार्यों के सामंजस्य से कृति–विशेष के रूप में विकसित करते हुए ऐसा मनोहर रूप प्रदान करता है कि वह सहृदय पाठक की अनुभूति का विषय बन सके, उदात्त रचना विधान कहा जा सकता है।*

नागार्जुन की अधिकांश कविताओं में भाव, भाषा, अलंकार, शैली, प्रतीक, बिंब आदि का समुचित सामंजस्य है, जो उनकी कविता को रचना विधान की दृष्टि से संपुष्ट करता है। उदाहरण के लिये *'बादल को घिरते देखा है', 'प्रतिबद्ध हूँ, संबद्ध हूँ, आबद्ध हूँ', 'अकाल और उसके बाद', 'उनको प्रणाम' 'कालिदास', 'जी हाँ, लिख रहा हूँ' 'घिन तो नहीं आती है' 'सिंदूर तिलकित भाल' 'खुरदरे पैर' 'शासन की बंदूक', 'तीनों बंदर बापू के', 'पछाड़ दिया मेरे आस्तिक ने', 'मनुष्य हूँ', चंदू मैंने सपना देखा'* इत्यादि नागार्जुन की कई रचनाएं हैं जिनका रचना विधान बहुत ही उच्च कोटि है। यही कारण है कि नागार्जुन की रचनाएं आम आदमी को रिझाती भी है, तो साहित्यिक पंडितों को लुभाती भी है। इसे उनका कलात्मक कौशल ही कहेंगे, जिसके बारे में शिव कुमार मिश्र ने कहा है– *'भाषा का अद्‌भुत वैविध्य तथा सजीवता, शैली की अकृत्रिम जीवंतता, काव्य रूपों में नए–नए प्रयोग, छंदों की अनेकविध प्रस्तुतियाँ नागार्जुन की कविता के वैशिष्ट्य हैं । इतनी जीवंत तथा समृद्ध भाषा लिखने वाला, छंदों को लेकर इतना परिश्रम करने वाला तथा रंगों, गंधों, रूपों का इतना निरिक्षण–पर्यवेक्षण का धनी कवि हिंदी में आधुनिक कविता में नागार्जुन को छोड़कर कोई दूसरा नहीं है।'17* इस प्रकार हम कह सकते हैं कि उदात्त रचना विधान की दृष्टि से भी नागार्जुन की कविता पूर्णतया सशक्त एवं समर्थ है।

वास्तव में जिस कवि की संपूर्ण रचनावली में उदात्त तत्व पर प्रबंध लिखे जाने की जरूरत हो, महज कुछ कविताओं के आधार पर उनके समूचे व्यक्तित्व और साहित्य में औदात्य की खोज करना और उसे चंद पन्नों तक सीमित कर देना, न आसान काम है और न ही उचित। लेकिन, इतना तो स्पष्ट है कि नागार्जुन की चेतना उदात्त एवं विकासोन्मुख है तथा उनका जीवन तुच्छ और संकीर्ण विचारों से ऊपर उठकर, मानव के लिये, पूरी मानवता के लिये स्थायी महत्त्व की रचना प्रस्तुत करने में व्यतीत हुई है और यही उनकी कविता में औदात्य तत्व का सबसे कारण है। इस कारण हिंदी कविता के इतिहास में नागार्जुन का स्थान अक्षुण्ण रहेगा।

संदर्भ–

1. नागार्जुन प्रतिनिधि रचनाएं, संपादक नामवरसिंह, भूमिका से, राजकमल पेपरबैक्स, तृतीय संस्करण 1988, पांचवी आवृत्ति 2001
2. कविता कोष
3. उदात्त के विषय में, डॉ निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1983
4. उदात्त के विषय में, डॉ निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1983
5. समाजवादी यथार्थवाद और नागार्जुन का काव्य– प्रेमलता दुआ, पृष्ठ 135
6. डॉ जगन्नाथ पंडित – नागार्जुन का काव्य और युगः अंतः संबंधों का अनुशीलन, पृ. 224
7. डॉ रतन कुमार पाण्डेय – नागार्जुन की काव्यभाषा, पृष्ठ 119
8. डॉ जगन्नाथ पंडित – नागार्जुन का काव्य और युगः अंतः संबंधों का अनुशीलन, पृ. 225 9. डॉ ललिता अरोड़ा– नागार्जुन एक अध्ययन, पृष्ठ–183
10. डॉ जगन्नाथ पंडित – नागार्जुन का काव्य और युगः अंतः संबंधों का अनुशीलन, पृ. 228
11. नागार्जुन प्रतिनिधि रचनाएं, संपादक – नामवरसिंह, भूमिका से, राजकमल पेपरबैक्स, तृतीय संस्करण 1988, पांचवी आवृत्ति 2001
12. नया हिंदी काव्य– डॉ शिव कुमार मिश्र, पृष्ठ – 189
13. युगधारा – नागार्जुन, पृष्ठ – 104
14. भस्मांकुर– नागार्जुन, पृष्ठ – 135
15. नागर्जुन रचनावली, खंड–1 – संपादक – शोभाकांत, पृष्ठ – 280
16. नागार्जुन रचना प्रसंग और दृष्टि – रामनिहाल गुंजन, पृष्ठ – 118
17. डॉ ललिता अरोड़ा– नागार्जुन एक अध्ययन, पृष्ठ–185